दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 14.11.2019

प्रकाशनार्थ

आज दिनांक 14.11.2019 को शिक्षाशास्त्र विभाग के तत्वावधान में आयोजित अधिगम के सिद्धान्त एवं अभिप्रेरणा विषय पर विशिष्ट व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो0 राजेश कुमार सिंह, शिक्षाशास्त्र विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने कहा कि अधिगम ज्ञानार्जन की एक सनातन प्रक्रिया है जिसमें बालक अपने पूर्व अनुभव के द्वारा वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करता है तथा अभ्यास के द्वारा उसमें परिवर्तन करता रहता है । हमारी पाँचों ज्ञाननेद्रियाँ क्रमशः आँख, कान, नाक, जीह्व तथा त्वचा सुनकर देखकर स्पर्श कर वाह्य विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है अतः किसी मूलभूत विषय की विशेषता को सीखने की प्रक्रिया ही अधिगम है। लेकिन अधिगम के लिए निरंतर अभ्यास कार्य करने के प्रति जागरूक तथा सदा कुछ नया सीखने की ललक होनी चाहिए। दुनिया के अनेक मनोवैज्ञानिकों एवं विचारकों ने इस प्रक्रिया का प्रयोग विभिन्न पशु–पक्षियों पर किया तब इसको मानव समाज पर लागू किया।

पुनः उन्होंने अभिप्रेरणा विषय पर बोलते हुए कहा कि किसी भी कार्य को करने में अभिप्रेरणा एक ऐसे चालक के रूप में कार्य करती है जिससे व्यक्ति स्वतः कार्य करने के लिए प्रेरित होता है। अभिप्रेरणा मानव समाज को पुनर्बल प्रदान करने वाला एक उत्तम साधन है इससे मानव के अन्दर से अवांछनीय व्यवहार तथा नकारात्मक सोच का ह्रास होने लगता है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा अधिगम एवं अभिप्रेरणा तभी सम्भव है जब मनुष्य के अन्दर अनुशासन हो क्योंकि आत्मानुशासन ही प्रथम सोपान होता है।

विषय प्रवर्तन तथा अतिथियों का स्वागत विभाग की प्रभारी श्रीमती निधि राय ने संचालन डॉ. अखण्ड प्रताप सिंह ने तथा आभार ज्ञापन डॉ. रूक्मिणी चौधरी ने किया। उक्त अवसर पर डॉ. वीणा गोपाल मिश्रा, डॉ. जागृति विश्वकर्मा, डॉ. सरिता सिंह आदि उपस्थित थे।

डॉ.(मुरली मनोहर तिवारी)
सूचना एवं जनसम्पर्क प्रभारी